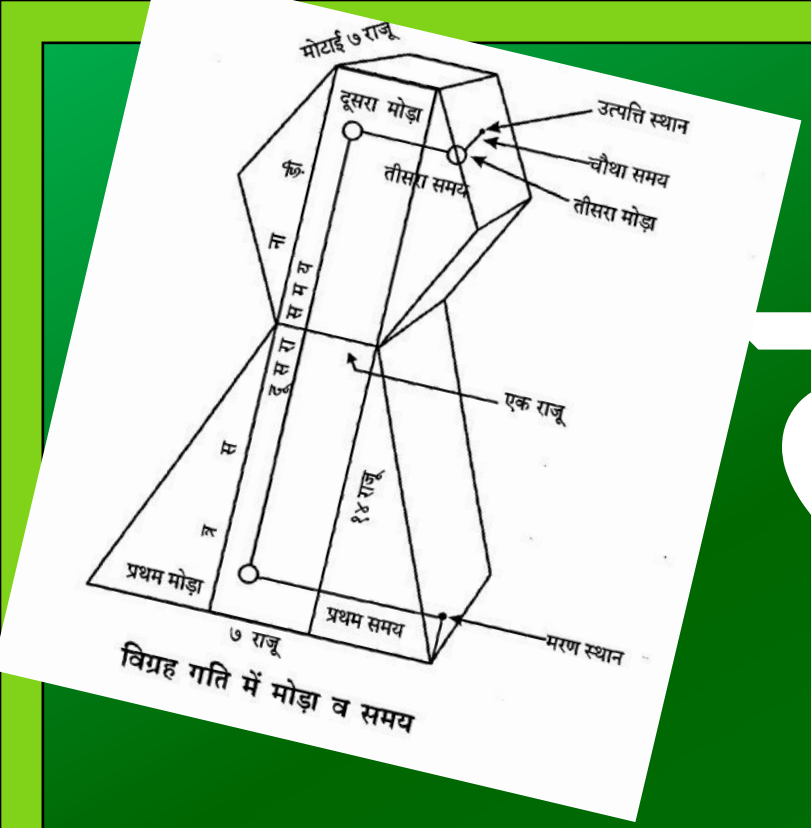

विग्रह गति में मोड़ा व समय

तत्त्वार्थ सूत्र

द्वितीय अध्याय

Presentation Developed By:
श्रीमति सारिका छाबड़ा

www.JainKosh.org

विषय वस्तु

प्रकरण	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
जीव के असाधारण भाव	1 - 7	7
जीव का लक्षण	8 - 9	2
जीव के भेद	10 - 14	5
इन्द्रियाँ	15 – 24	10
विग्रह गति	25 - 30	6
जन्म और योनी	31 - 35	5
शरीर	36 - 49	14
वेद	50 – 52	3
आयु अपवर्तन से मरण	53	1

www.JainKosh.org

❁251. आह, सम्यग्दर्शनस्य विषयभावेनोपदिष्टेषु जीवादिष्वादावुपन्यस्तस्य जीवस्य किं स्वतत्त्वमित्युच्यते –

❁251. सम्यग्दर्शनके विषयरूपसे जीवादि पदार्थों का कथन किया। उनके आदिमें जो जीव पदार्थ आया है उसका स्वतत्त्व क्या है यह बतलानेके लिए आगे का सूत्र कहते हैं –

www.JainKosh.org

औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्वमौदयिक-पारिणामिकौ च ॥1॥

☸ औपशमिक, क्षायिक, मिश्र अर्थात् क्षायोपशमिक, औदयिक और पारिणामिक – ये जीव के 5 असाधारण भाव हैं ।

www.JainKosh.org

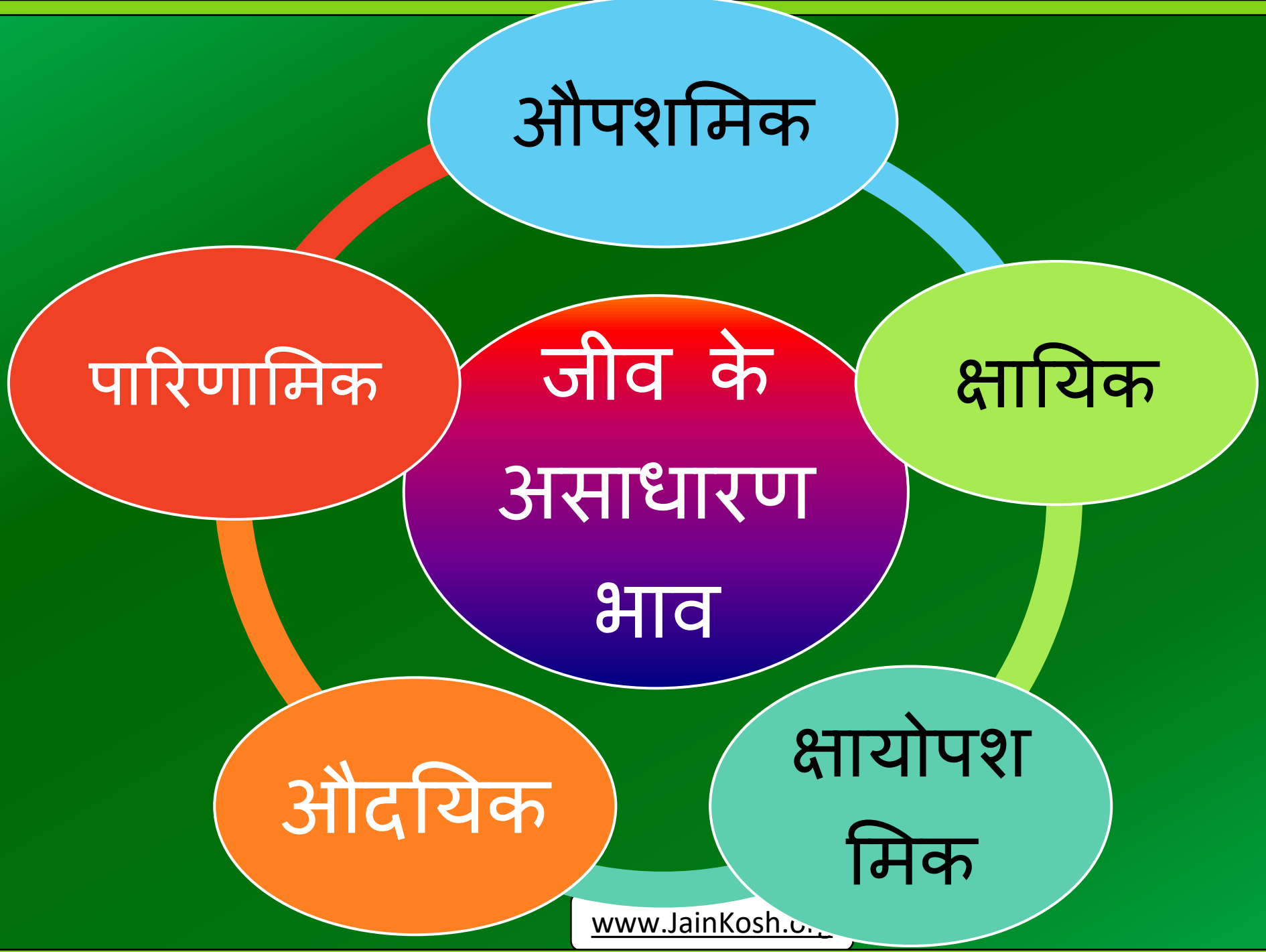

www.JainKosh.o

जीव के असाधारणभाव

जीव के अतिरिक्त
अन्य द्रव्यों में न पाये जाने वाले
अर्थात् मात्र जीव में ही पाये जाने वाले भावों को
जीव के असाधारणभाव कहते हैं ।

www.JainKosh.org

252. आत्मनि कर्मणः स्वशक्तेः कारणवशादनुद्भूतिरुपशमः। यथा कतकादिद्रव्यसंबन्धादम्भसि पंकस्य उपशमः। क्षय आत्यन्तिकी निवृत्तिः। यथा तस्मिन्नेवाम्भसि शुचिभाजनान्तरसंक्रान्ते पंकस्यात्यन्ताभावः। उभयात्मको मिश्रः। यथा तस्मिन्नेवाम्भसि कतकादिद्रव्यसंबन्धात्पंकस्य क्षीणाक्षीणवृत्तिः। द्रव्यादिनिमित्तवशात्कर्मणां फलप्राप्तिरुदयः। द्रव्यात्मलाभमात्रहेतुकः परिणामः। उपशमः प्रयोजनमस्येत्यौपशमिकः। एवं क्षायिकः क्षायोपशमिकः औदयिकः पारिणामिकश्च। त एते पञ्च भावा असाधारणा जीवस्य स्वतत्त्वमित्युच्यन्ते।

www.JainKosh.org

उपशम	औपशमिक
क्षय	क्षायिक
क्षयोपशम	क्षायोपशमिक
उदय	औदयिक
परिणाम	पारिणामिक
से संबंध रखे, वह है	

www.JainKosh.org

औपशमिक भाव

मोहनीय कर्म के

अंतरकरणरूप उपशम के निमित्त से

होनेवाले जीव के भावों को

औपशमिक भाव कहते हैं ।

www.JainKosh.org

क्षायिक भाव

कर्मक्षय के समय में होनेवाले

एवं भविष्य में अनंत काल पर्यंत रहने वाले

जीव के शुद्धभावों को

क्षायिक भाव कहते हैं ।

www.JainKosh.org

क्षायोपशमिक भाव

कर्म के क्षयोपशम के निमित्त से होनेवाले

जीव के भावों को

क्षायोपशमिक भाव कहते हैं ।

www.JainKosh.org

औदयिक भाव

कर्मोदय के निमित्त से होनेवाले

जीव के भावों को

औदयिक भाव कहते हैं ।

www.JainKosh.org

पारिणामिक भाव

पूर्णतः कर्मनिरपेक्ष अर्थात्

कर्म के उपशम, क्षय, क्षयोपशम और उदय से निरपेक्ष

जीव के परिणामों को

पारिणामिक भाव कहते हैं ।

www.JainKosh.org

विशेष

- शुरू के 4 भाव निमित्त की प्रधानता से कहे हैं और अंतिम भाव योग्यता की प्रधानता से कहा है
- इन 5 भावों के जीवों की संख्या के क्रम के कारण से सूत्र में इनका क्रम इस प्रकार रखा गया है

www.JainKosh.org

253. सम्यग्दर्शनस्य प्रकृतत्वात्तस्य त्रिषु विकल्पेषु औपशमिकमादौ लभ्यत इति तस्यादौ ग्रहणं क्रियते। तदनन्तरं क्षायिकग्रहणम्; तस्य प्रतियोगित्वात् संसार्यपेक्षया द्रव्यतस्ततोऽसंख्येयगुणत्वाच्च। तत उत्तरं मिश्रग्रहणम्; तदुभयात्मकत्वात्ततोऽसंख्येयगुणत्वाच्च। तेषां सर्वेषामनन्तगुणत्वाद् औदयिकपारिणामिकग्रहणमन्ते क्रियते।

www.JainKosh.org

- अत्र द्वन्द्वनिर्देशः कर्तव्यः - औपशमिकक्षायिकमिश्रौदयिकपारिणामिका इति। तथा सति द्विः ‘च’शब्दो न कर्तव्यो भवति।
- नैवं शङ्क्यम्; अन्यगुणापेक्षया इति प्रतीयेत। वाक्ये पुनः सति ‘च’शब्देन प्रकृतोभयानुकर्षः कृतो भवति।
- तर्हि क्षायोपशमिकग्रहणमेव कर्तव्यमिति चेत्। न; गौरवात्। मिश्रग्रहणं मध्ये क्रियते उभयापेक्षार्थम्।
- भव्यस्य औपशमिकक्षायिकौ भावौ। मिश्रः पुनरभव्यस्यापि भवति, औदयिकपारिणामिकाभ्यां सह भव्यस्यापीति।
- भावापेक्षया तल्लिङ्गसंख्याप्रसङ्गः स्वतत्त्वस्येति चेत् ? न; उपात्तलिंगसंख्यत्वात्[1]। तद्भावस्तत्त्वम्। स्वं तत्त्वं स्वतत्त्वमिति।

www.JainKosh.org

❁254. अत्राह तस्यैकस्यात्मनो ये भावा औपशमिकादयस्ते किं भेदवन्त उताभेदा इति। अत्रोच्यते, भेदवन्तः। यद्येवं, भेदा उच्यन्तामित्यत आह -

❁254. उस एक आत्मा के जो औपशमिक आदि भाव हैं, उनके कोई भेद हैं या नहीं ? भेद हैं। यदि ऐसा है तो इनके भेदों का कथन करना चाहिए, इसलिए आगेका सूत्र कहते हैं –

www.JainKosh.org

द्वि-नवाष्टादशैकविंशतित्रिभेदा यथाक्रमम् ॥2॥

☸इनके भेद क्रम से दो, नौ, अठारह, इक्कीस और तीन हैं ।

www.JainKosh.org

भाव

औपशमिक	क्षायिक	क्षायोपशमिक	औदयिक	पारिणामिक
2	9	18	21	3

www.JainKosh.org

☸255. द्व्यादीनां संख्याशब्दानां कृतद्वन्द्वानां भेदशब्देन सह स्वपदार्थेऽन्यपदार्थे वा वृत्तिर्वेदितव्या। द्वौ च नव च अष्टादश च एकविंशतिश्च त्रयश्च द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रय:[1]। ते च ते भेदाश्च, त एव भेदा येषामिति वा वृत्तिर्द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रिभेदा इति। यदा स्वपदार्थे वृत्तिस्तदा औपशमिकादीनां[2] भावानां द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रयो भेदा इत्यभिसंबन्ध: क्रियते; अर्थवशाद्विभक्तिपरिणाम इति। यदान्यपदार्थे वृत्तिस्तदा निर्दिष्टविभक्त्यन्ता एवाभिसंबध्यन्ते, औपशमिकादयो भावा द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रिभेदा इति। 'यथाक्रम' वचनं यथासंख्यप्रतिपत्त्यर्थम्। औपशमिको द्विभेद:। क्षायिको नवभेद:। मिश्रोऽष्टादशभेद:। औदयिक एकविंशतिभेद: । पारिणामिकस्त्रिभेद इति।

www.JainKosh.org

सम्यक्त्व-चारित्रे ॥3॥

☸औपशमिक भाव के 2 भेद हैं – उपशम सम्यक्त्व और उपशम चारित्र ।

www.JainKosh.org

5 भावों को समझने के लिए आवश्यक कर्म प्रकृतियाँ -

www.JainKosh.org

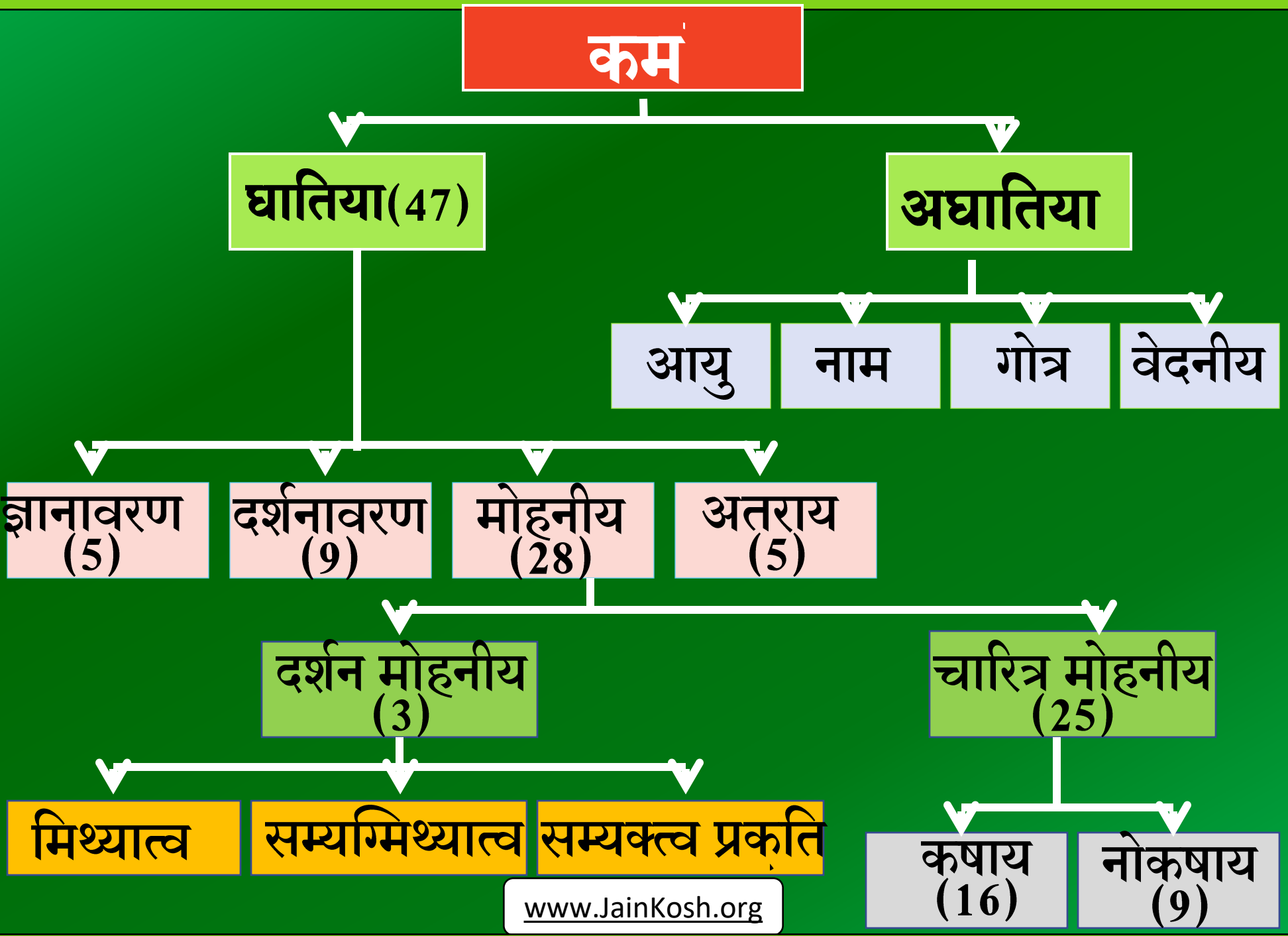
कर्म
घातिया(47)
अघातिया
आयु
नाम
गोत्र
वेदनीय
ज्ञानावरण (5)
दर्शनावरण (9)
मोहनीय (28)
अतराय (5)
दर्शन मोहनीय (3)
चारित्र मोहनीय (25)
मिथ्यात्व
सम्यग्मिथ्यात्व
सम्यक्त्व प्रकृति
कषाय (16)
नोकषाय (9)
www.JainKosh.org

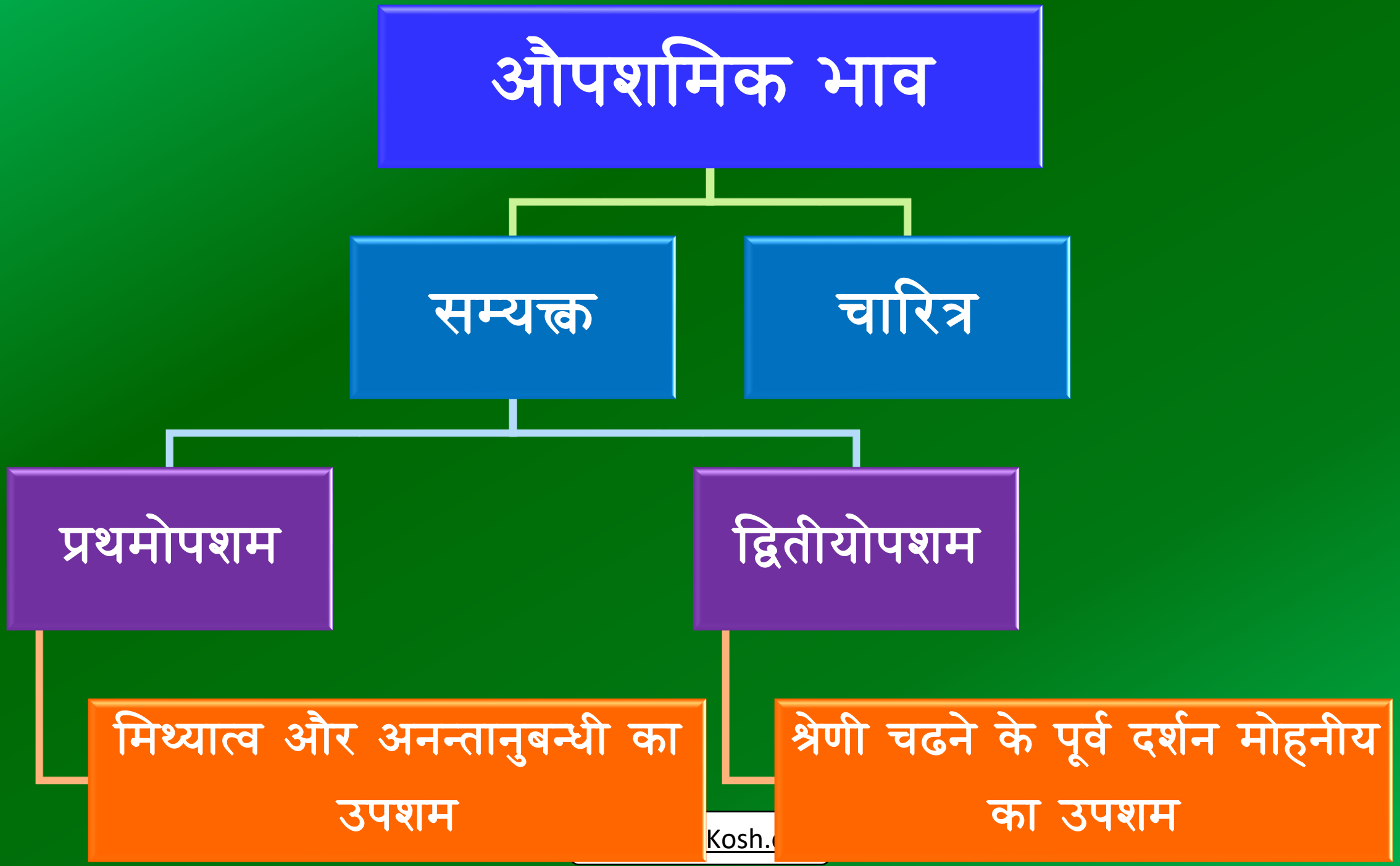
औपशमिक भाव
सम्यक्त्व
चारित्र
प्रथमोपशम
द्वितीयोपशम
मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धी का उपशम
श्रेणी चढने के पूर्व दर्शन मोहनीय का उपशम

अनादि मिथ्यादृष्टि के सम्यक्त्व की प्रक्रिया

4 लब्धि प्राप्त कर

5वी लब्धि के 3 करण परिणाम कर

उपशम सम्यक्त्व प्राप्त करे

www.JainKosh.org

5 लब्धि

क्षयोपशम लब्धि	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त होना
विशुद्ध लब्धि	कषायों की मंदता होना, धर्मानुराग रूप शुभ परिणामों की प्राप्ति
देशना लब्धि	6 द्रव्य, 7 तत्त्व आदि का उपदेश देने वाले आचार्यादि का लाभ, उनके उपदेश की प्राप्ति, उपदेशित पदार्थ को धारण करने की प्राप्ति
प्रायोग्यता लब्धि	बंध और सत्ता दोनों के कर्मों की स्थिति अंत:कोड़ाकोड़ी सागर करना
करण लब्धि	3 करण परिणाम होते हैं – अध:प्रवृत्तकरण, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण

www.JainKosh.org

औपशमिक सम्यक्त्व

दर्शन मोहनीय की 1 या 2 या 3 प्रकृतियों का प्रशस्त उपशम करने पर तथा

अनन्तानुबन्धी की 4 प्रकृतियों का अप्रशस्त उपशम होने पर

होने वाले जीव के सम्यक्त्व परिणाम को औपशमिक सम्यक्त्व कहते हैं ।

www.JainKosh.org

उपशम किसे कहते हैं?

कर्मों का अपने परिणामों के निमित्त से आगे-पीछे करना वह उपशम (प्रशस्त उपशम) कहलाता है ।

उससे जो gap/empty space बनेगा तब उस gap / empty space में उस-उस कर्म प्रकृति का उदय नहीं रहेगा ।

www.JainKosh.org

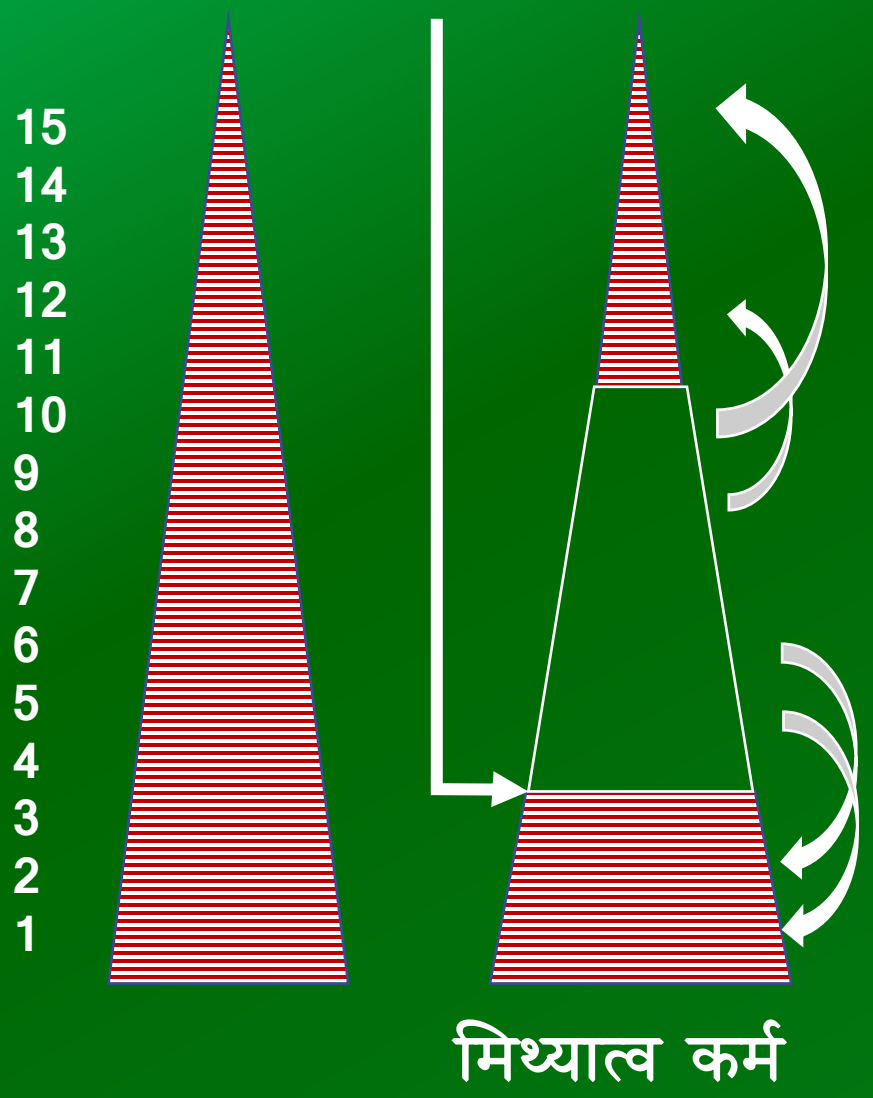

प्रथमोपशम सम्यक्त्व का प्रथम समय
15
14
13
12
11
10
9
8
7
6
5
4
3
2
1
कर्मों के उदय को आगे करना
औपशमिक सम्यक्त्व
(कर्म के उदय का अभाव)
अंतर्मुहूर्त काल
कर्मों को पहले उदय में लाना
मिथ्यात्व कर्म
www.JainKosh.org

औपशमिक सम्यक्त्व से जाने के 4 मार्ग

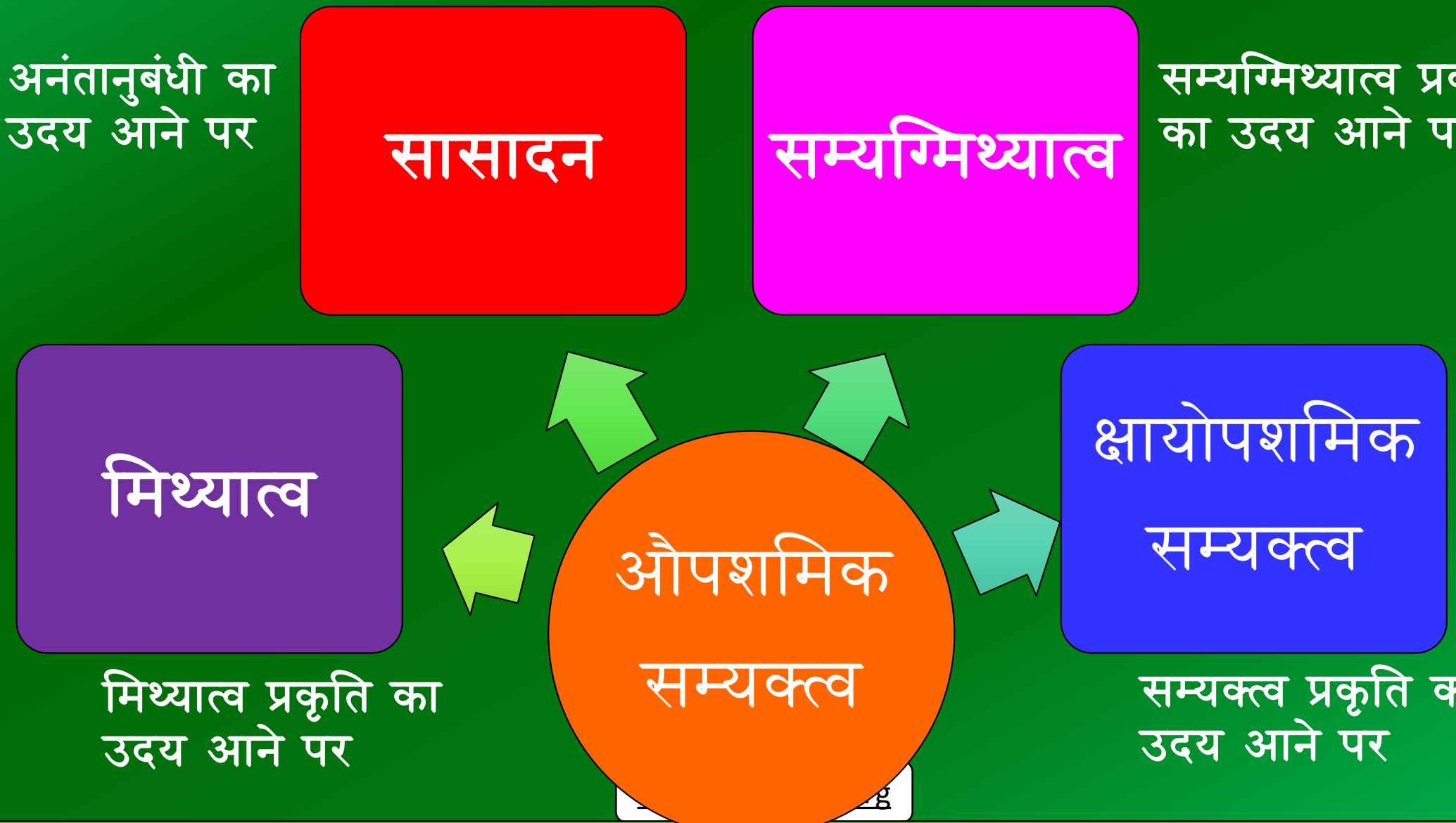

औपशमिक भाव के बारे में कुछ तथ्य:

- ये भाव temporary शुद्धभाव होता है ।
- 4 से 11 गुणस्थान तक ये भाव हो सकते हैं ।
- दर्शन और चारित्र मोहनीय की ही उपशमना हो सकती है ।

www.JainKosh.org

- 258. अनादिमिथ्यादृष्टेर्भव्यस्य कर्मोदयापादितकालुष्ये सति कुतस्तदुपशमः ? काललब्ध्यादिनिमित्तत्वात्।
- तत्र काललब्धिस्तावत्-कर्माविष्ट आत्मा भव्यः कालेऽर्द्धपुद्गलपरिवर्तनाख्येऽवशिष्टे प्रथमसम्यक्त्वग्रहणस्य योग्यो भवति नाधिके इति। इयमेका काललब्धिः।
- अपरा कर्मस्थितिका काललब्धिः। उत्कृष्टस्थितिकेषु कर्मसु जघन्यस्थितिकेषु च प्रथमसम्यक्त्वलाभो न भवति। क्व तर्हि भवति ? अन्तःकोटाकोटीसागरोपमस्थितिकेषु कर्मसु बन्धमापद्यमानेषु विशुद्धपरिणामवशात्सत्कर्मसु च ततः संख्येयसागरोपमसहस्रोनायामन्तःकोटीकोटीसागरोपमस्थितौ स्थापितेषु प्रथमसम्यक्त्वयोग्यो भवति।
- अपरा काललब्धिर्भवापेक्षया। भव्यः पञ्चेन्द्रियः संज्ञी पर्याप्तकः सर्वविशुद्धः प्रथमसम्यक्त्वमुत्पादयति।
- 'आदि'शब्देन जातिस्मरणादिः परिगृह्यते।

www.JainKosh.org

259. कृत्स्नस्य मोहनीयस्योपशमादौपशमिकं चारित्रम्। तत्र सम्यक्त्वस्यादौ वचनं; तत्पूर्वकत्वाच्चारित्रस्य।

www.JainKosh.org

❁260. यः क्षायिको भावो नवविध उद्दिष्टस्तस्य भेदस्वरूपप्रतिपादनार्थमाह -

❁260. जो क्षायिकभाव नौ प्रकार का कहा है उसके भेदों के स्वरूप का कथन करने के लिए आगे का सूत्र कहते हैं –

www.JainKosh.org

ज्ञान-दर्शन-दान-लाभ-भोगोपभोग-वीर्याणि च ॥4॥

☸क्षायिक भाव के नौ भेद हैं – क्षायिक सम्यक्त्व, चारित्र, ज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य ।

www.JainKosh.org

कर्मों का बंध, उदय और सत्ता से नाश होना क्षय कहलाता है

www.JainKosh.org

क्षायिक भाव

क्षायिक सम्यक्त्व	क्षायिक चारित्र	क्षायिक ज्ञान	क्षायिक दर्शन
क्षायिक दान	क्षायिक लाभ	क्षायिक भोग	क्षायिक उपभोग
क्षायिक वीर्य			

- 261. ‘च’शब्दः सम्यक्त्वचारित्रानुकर्षणार्थः।
- ज्ञानावरणस्यात्यन्तक्षयात्केवलज्ञानं क्षायिकं तथा केवलदर्शनम्।
- दानान्तरायस्यात्यन्तक्षयादनन्तप्राणिगणानुग्रहकरं क्षायिकमभयदानम्।
- लाभान्तरायस्याशेषस्य निरासात् परित्यक्तकवलाहारक्रियाणां केवलिनां यतः शरीरबलाधानहेतवोऽन्य-मनुजासाधारणाः परमशुभाः सूक्ष्माः अनन्ताः प्रतिसमयं पुद्गलाः संबन्धमुपयान्ति स क्षायिको लाभः।

www.JainKosh.org

- कृत्स्नस्य भोगान्तरायस्य[1] तिरोभावादाविर्भूतोऽतिशयवाननन्तो भोगः क्षायिकः। यतः कुसुमवृष्ट्यादयो विशेषाः प्रादुर्भवन्ति।
- निरवशेषस्योपभोगान्तरायस्य प्रलयात्प्रादुर्भूतोऽनन्त उपभोगः क्षायिकः। यतः सिंहासनचामरच्छत्रयादयो विभूतयः।
- वीर्यान्तरायस्य कर्मणोऽत्यन्तक्षयादाविर्भूतमनन्तवीर्यं क्षायिकम्।
- पूर्वोक्तानां सप्तानां प्रकृतीनामत्यन्तक्षयात्क्षायिकं सम्यक्त्वम्। चारित्रमपि तथा।

www.JainKosh.org

- यदि क्षायिकदानादि-भावकृतमभयदानादि, सिद्धेष्वपि तत्प्रसंङ्गः ?
- नैष दोषः; शरीरनामतीर्थंकरनामकर्मोदयाद्यपेक्षत्वात्। तेषां तदभावे तदप्रसंगः।
- कथं तर्हि तेषां सिद्धेषु वृत्तिः ? [2]परमानन्दाव्याबाधरूपेणैव तेषां तत्र वृत्तिः। केवलज्ञानरूपेणानन्तवीर्यवृत्तिवत्।

www.JainKosh.org

क्षायिक सम्यक्त्व	• मोहनीय की 7 प्रकृतियों के क्षय से प्रगट क्षायिक सम्यक्त्व
क्षायिक चारित्र	• चारित्र मोहनीय कर्म के अभाव से प्रगट
क्षायिक ज्ञान	• ज्ञानावरण के अत्यंत क्षय से प्रगट केवलज्ञान

www.JainKosh.org

क्षायिक दर्शन

- दर्शनावरण के अत्यंत क्षय से प्रगट केवलदर्शन

क्षायिक दान

- दानान्तराय कर्म के अत्यंत क्षय होने से दिव्यध्वनि आदि द्वारा अनंत प्राणियों का उपकार करने वाला क्षायिक दान

क्षायिक लाभ

- लाभान्तराय के क्षय से केवली भगवान के शरीर का बिना भोजनादि ग्रहण किये बने रहना

www.JainKosh.org

क्षायिक भोग	• भोगान्तराय के अत्यंत क्षय से सुगन्धित पवन का बहना, पुष्प वृष्टि आदि क्षायिक भोग
क्षायिक उपभोग	• उपभोगान्तराय के अत्यंत क्षय से सिंहासन, 3 छत्र, भामंडल आदि का होना क्षायिक भोग
क्षायिक वीर्य	• वीर्यान्तराय कर्म के अत्यंत क्षय से क्षायिक वीर्य प्रगट होना

www.JainKosh.org

❁262. य उक्तः क्षायोपशमिको भावोऽष्टादशविकल्पस्तद्भेदनिरूपणार्थमाह -

❁262. जो अठारह प्रकार का क्षायोपशमिक भाव कहा है उसके भेदों का कथन करने के लिए आगे का सूत्र कहते हैं –

❁

www.JainKosh.org

ज्ञानाज्ञानदर्शन-लब्धयश्चतुस्त्रित्रि-पञ्च-भेदाः सम्यक्त्वचारित्रसंयमासंयमाश्च ॥5॥

- क्षायोपशमिक भाव के 18 भेद हैं –
- 4 ज्ञान, 3 अज्ञान, 3 दर्शन, 5 लब्धि,
- क्षायोपशमिक सम्यक्त्व, क्षायोपशमिक चारित्र और संयमासंयम ।

www.JainKosh.org

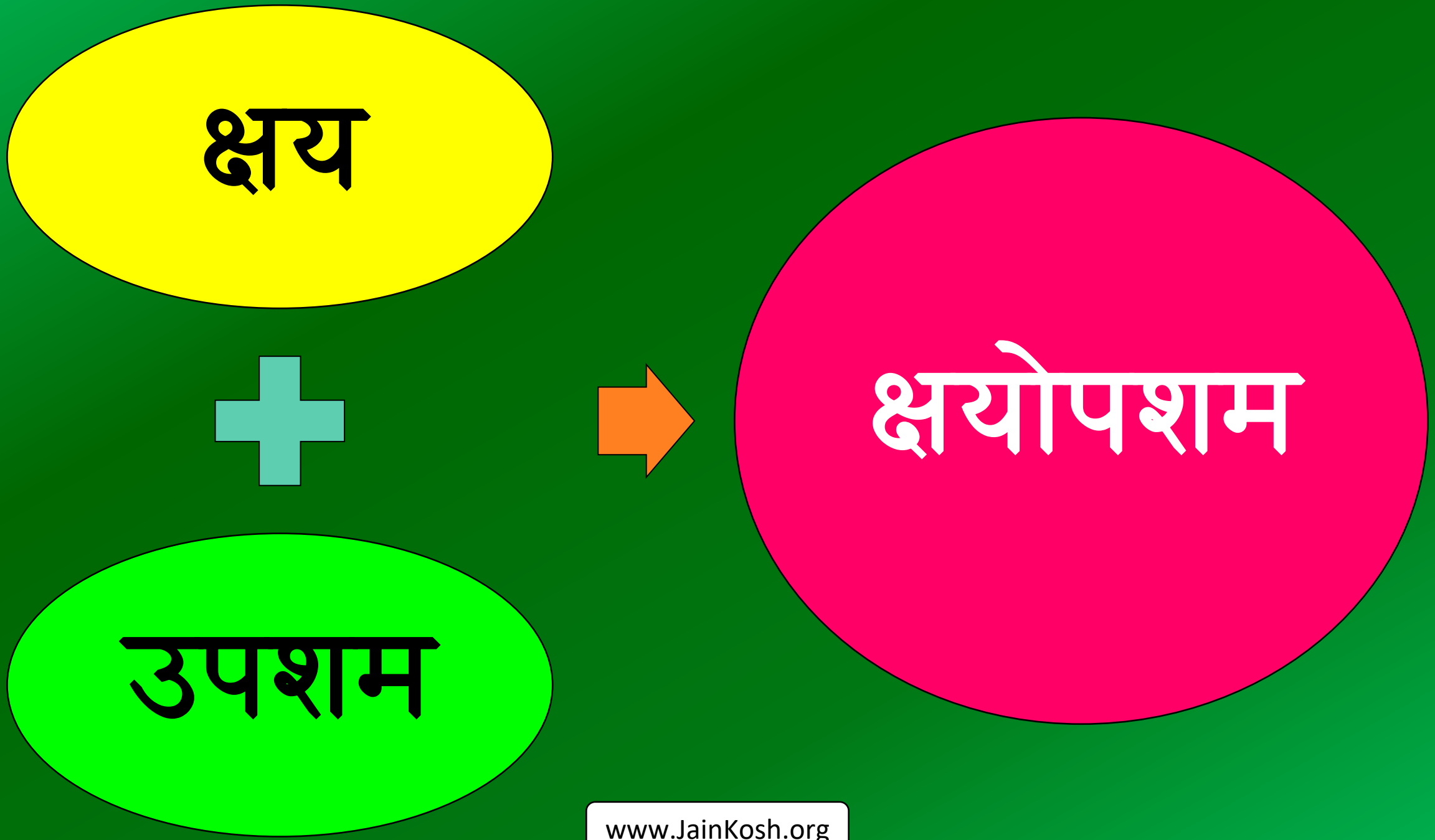

www.JainKosh.org

क्षयोपशम किसे कहते हैं?

क्षय	वर्तमानकालीन सर्वघाति स्पर्धकों का उदयाभावी क्षय
उपशम	भविष्य में उदय में आने योग्य सर्वघाति स्पर्धकों का सदवस्थारूप उपशम
उदय	वर्तमानकालीन देशघाती स्पर्धकों का उदय

इन तीनरूप कर्म की अवस्था को क्षयोपशम कहते हैं ।

www.JainKosh.org

उदयाभावी क्षय

सर्वघाती प्रकृतियों का अनंत गुणा हीन होकर देशघाती में परिवर्तित होकर उदय में आने को उदयाभावी क्षय कहते हैं ।

इसमें सर्वघाति स्पर्धक उदय में आने के एक समय पूर्व देशघाती में परिवर्तित होते हैं ।

www.JainKosh.org

घातिया कर्मों का अनुभाग

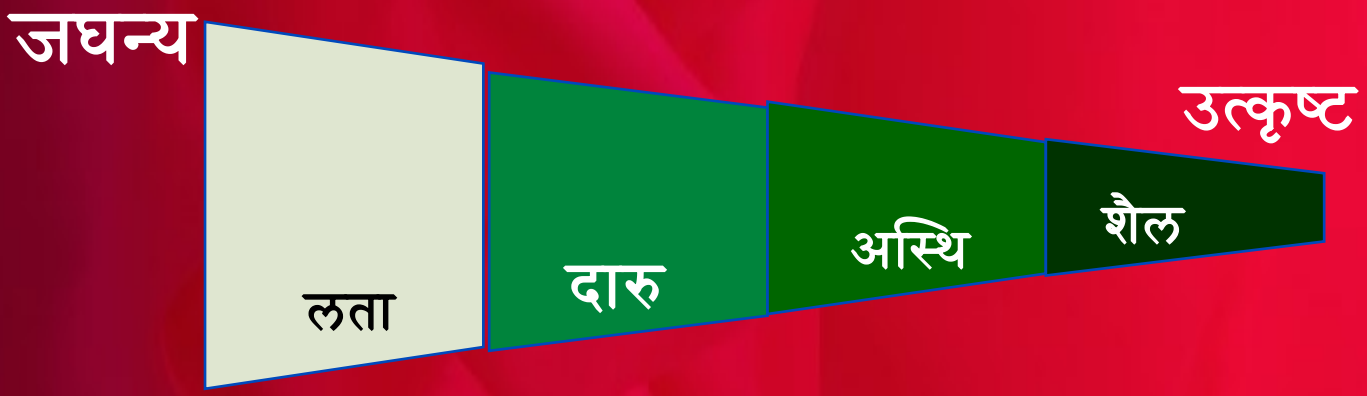

लता
- बेल

दारु
- काष्ठ, लकड़ी

अस्थि
- हड्डी

शैल
- पाषाण, पर्वत

जैसे इनमें उत्तरोत्तर अधिक-अधिक कठोरता पायी जाती है, उसी प्रकार घातिया कर्मों के अनुभाग अर्थात् फल देने की शक्ति इन-इन स्पर्धकों में अधिक-अधिक पायी जाती है।

घातिया कर्मों की अनुभाग-शक्ति दो प्रकार की है-

सर्वघाती

- आत्मा के गुण का पूर्णरूप से घात करने वाला ।

सारे लतारूप स्पर्धक देशघाती होते हैं ।

देशघाती

- आत्मा के गुण का एकदेशरूप से घात करने वाला ।

दारु के अनंतवे भाग स्पर्धक देशघाती होते हैं ।

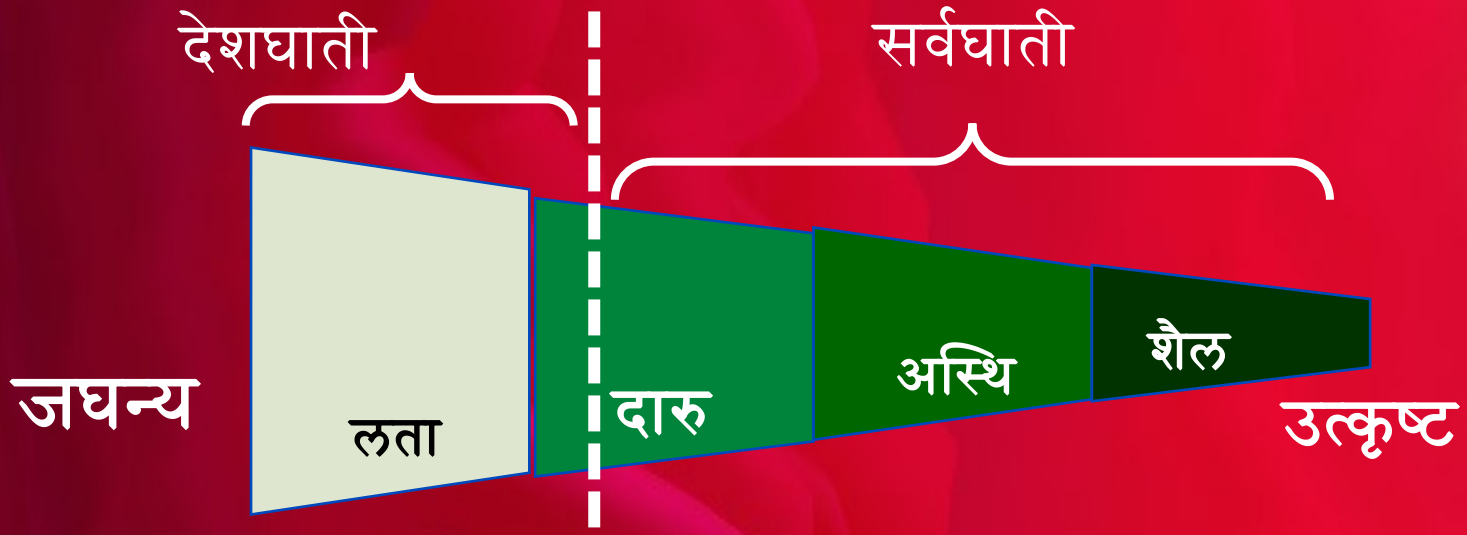

दारु के अनंत बहुभाग स्पर्धक सर्वघाती होते हैं ।

अस्थि और शैल स्पर्धक सर्वघाती होते हैं ।

उदयाभावी क्षय

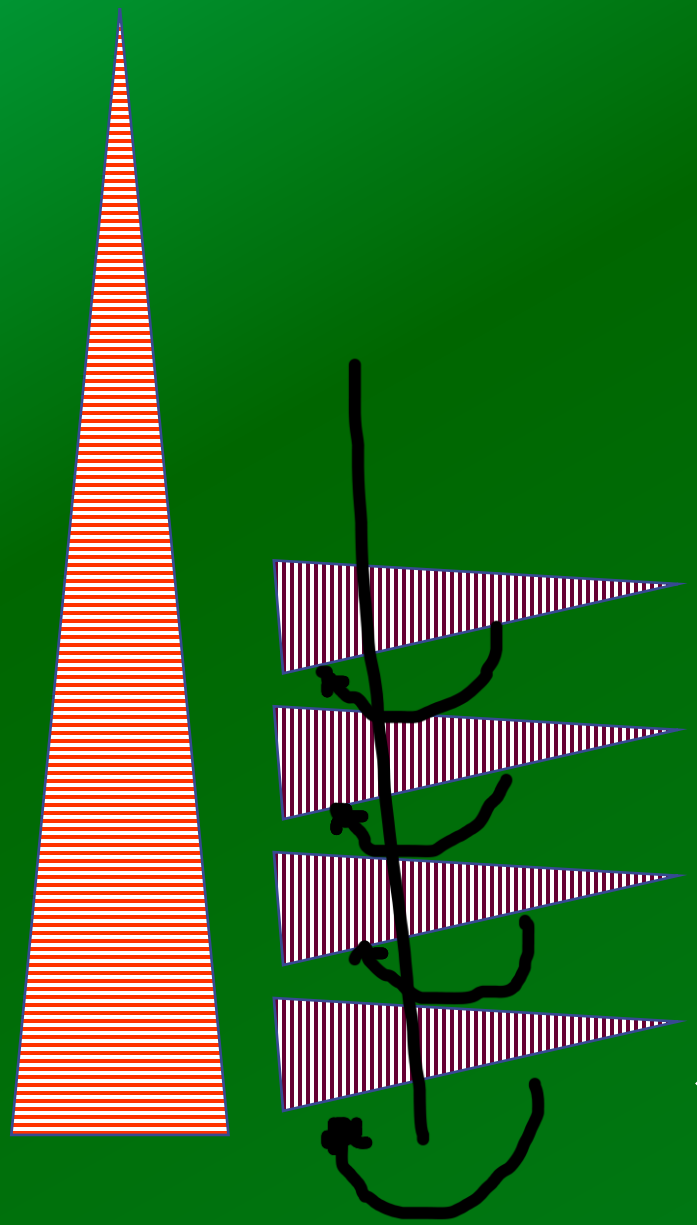

अनुभाग भेद

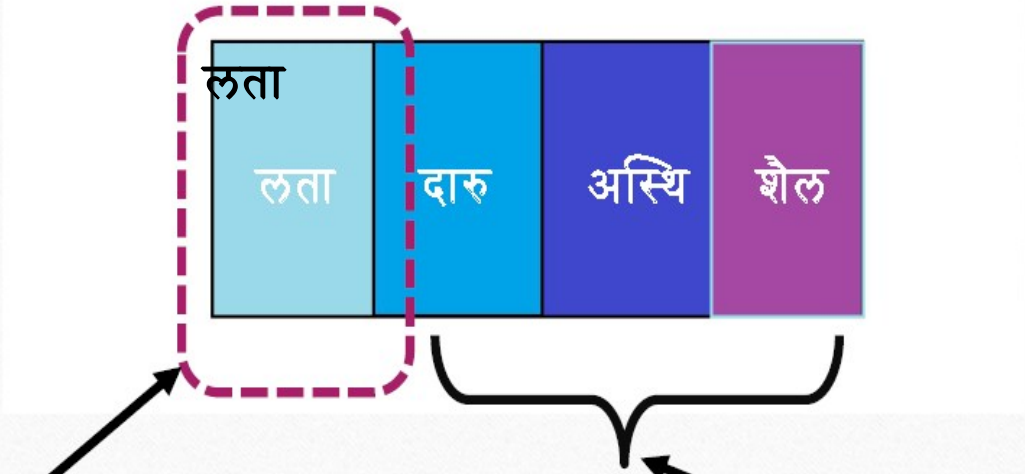

अनुभाग का अनंत गुणा हीन होना

सर्वघाति का देशघाति रूप उदय होना

www.JainKosh.org

सदवस्थारूप उपशम

वर्तमान समय को छोड़कर

भविष्य में उदय में आने वाले कर्मों के

सत्ता में रहने को

सदवस्थारूप उपशम कहते हैं ।

www.JainKosh.org

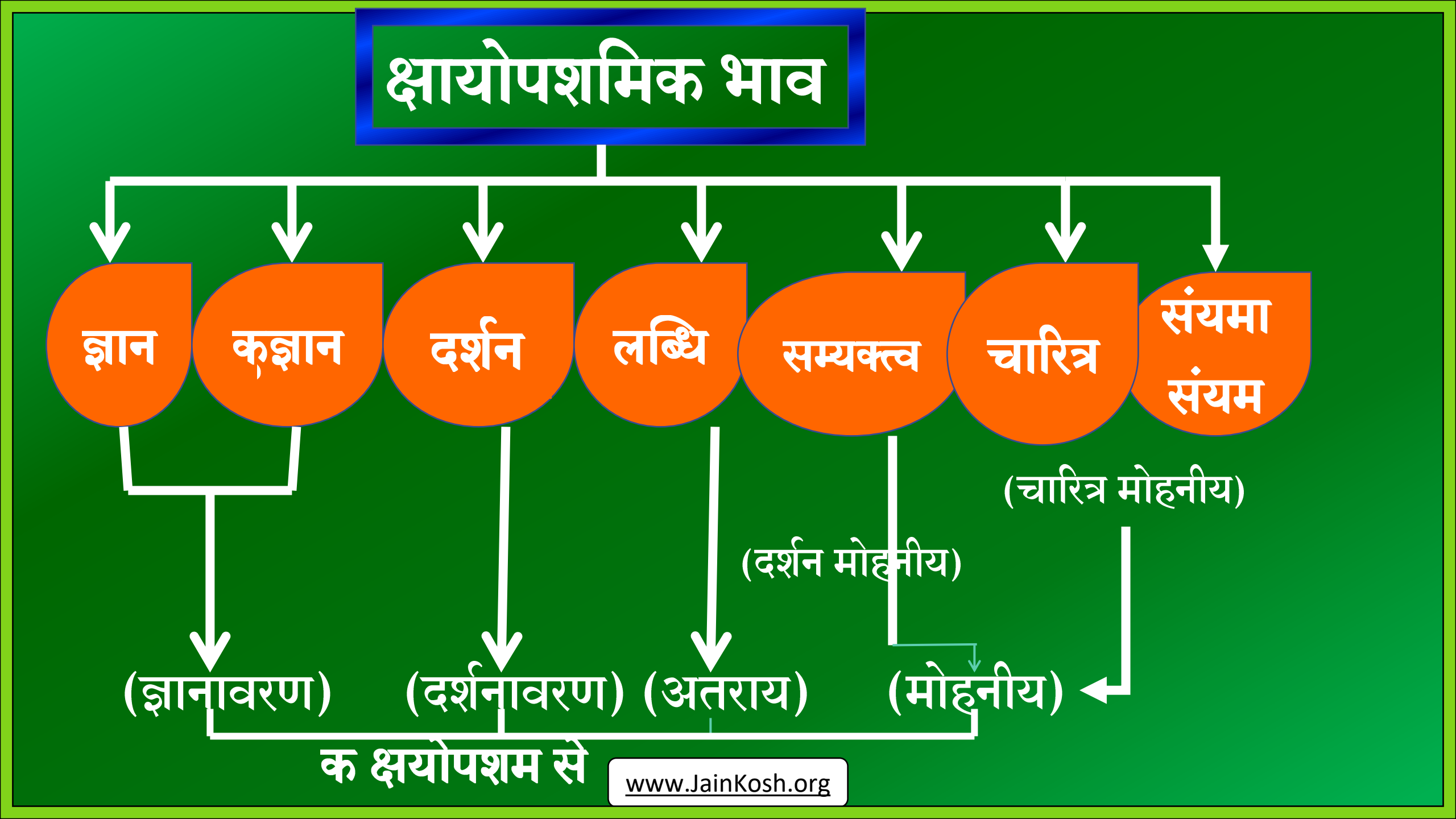
क्षायोपशमिक भाव
ज्ञान
कुज्ञान
दर्शन
लब्धि
सम्यक्त्व
चारित्र
संयमा संयम
(ज्ञानावरण)
(दर्शनावरण)
(अतराय)
(दर्शन मोहनीय)
(मोहनीय)
(चारित्र मोहनीय)
क क्षयोपशम से
www.JainKosh.org

- 263. चत्वारश्च त्रयश्च त्रयश्च पञ्च च चतुस्त्रित्रिपञ्च[1]। ते भेदाः यासां ताश्चतुस्त्रित्रिपञ्चभेदाः। यथाक्रममित्यनुवर्तते। तेनाभिसंबन्धाच्चतुरादिभिर्ज्ञानादीन्यभिसंबध्यन्ते। चत्वारि ज्ञानानि, त्रीण्यज्ञानानि, त्रीणि दर्शनानि, पञ्च लब्धय इति।
- सर्वघातिस्पर्द्धकानामुदयक्षयात्तेषामेव सदुपशमाद्देशघातिस्पर्द्धकानामुदये क्षायोपशमिको भावो भवति।
- तत्र ज्ञानादीनां वृत्तिः स्वावरणान्तरायक्षयोपशमाद् व्याख्यातव्या। 'सम्यक्त्व'ग्रहणेन वेदकसम्यक्त्वं गृह्यते।

www.JainKosh.org

- अनन्तानुबन्धिकषायचतुष्टयस्य मिथ्यात्वसम्यङ्मिथ्यात्व-योश्चोदयक्षयात्सदुपशमाच्च सम्यक्त्वस्य देशघातिस्पर्द्धकस्योदये तत्त्वार्थश्रद्धानं क्षायोपशमिकं सम्यक्त्वम्।
- अनन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानद्वादशकषायोदयक्षयात्सदुपशमाच्च संज्वलनकषायचतुष्टयान्यतम-देशघातिस्पर्द्धकोदये नोकषायनवकस्य यथासंभवोदये च निवृत्तिपरिणाम आत्मनः क्षायोपशमिकं चारित्रम्।
- अनन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यानकषायाष्टकोदयक्षयात्सदुपशमाच्च प्रत्याख्यानकषायोदये संज्वलनकषायस्य देशघातिस्पर्द्धकोदये नोकषायनवकस्य यथासंभवोदये च विरताविरतपरिणामः क्षायोपशमिकः संयमासंयम इत्याख्यायते।

www.JainKosh.org

मतिज्ञानावरण का क्षयोपशम

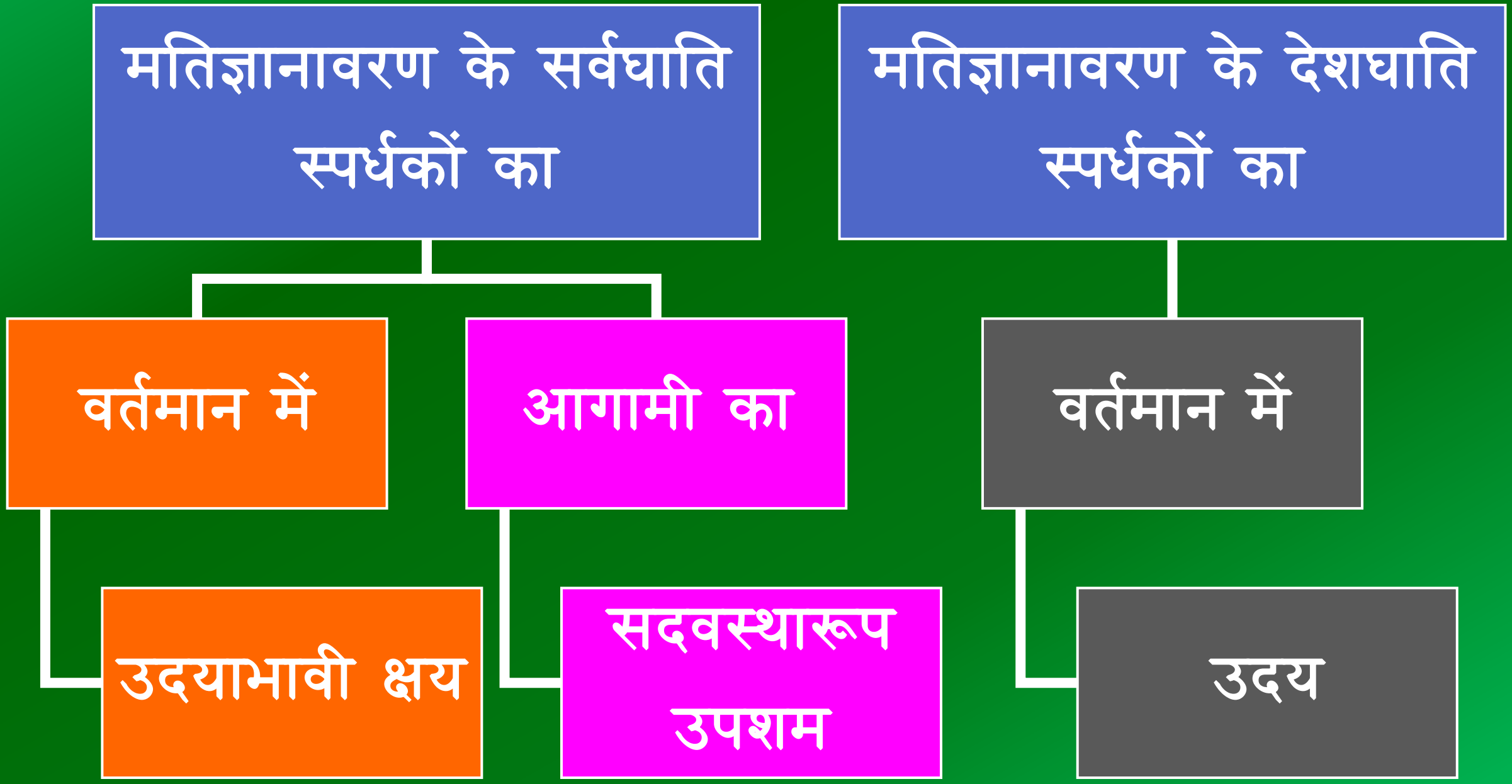

तीन-इन्द्रिय जीव के मतिज्ञानावरण का क्षयोपशम

3 इन्द्रिय (स्पर्शन, रसना, घ्राण) सम्बंधित मतिज्ञान का क्षयोपशम

बाकी की 2 इन्द्रिय (चक्षु और कर्ण) इन्द्रिय सम्बंधित सर्वघाती का उदय

www.JainKosh.org

4 ज्ञान
मतिज्ञान
श्रुतज्ञान
अवधिज्ञान
मन:पर्ययज्ञान
www.JainKosh.org

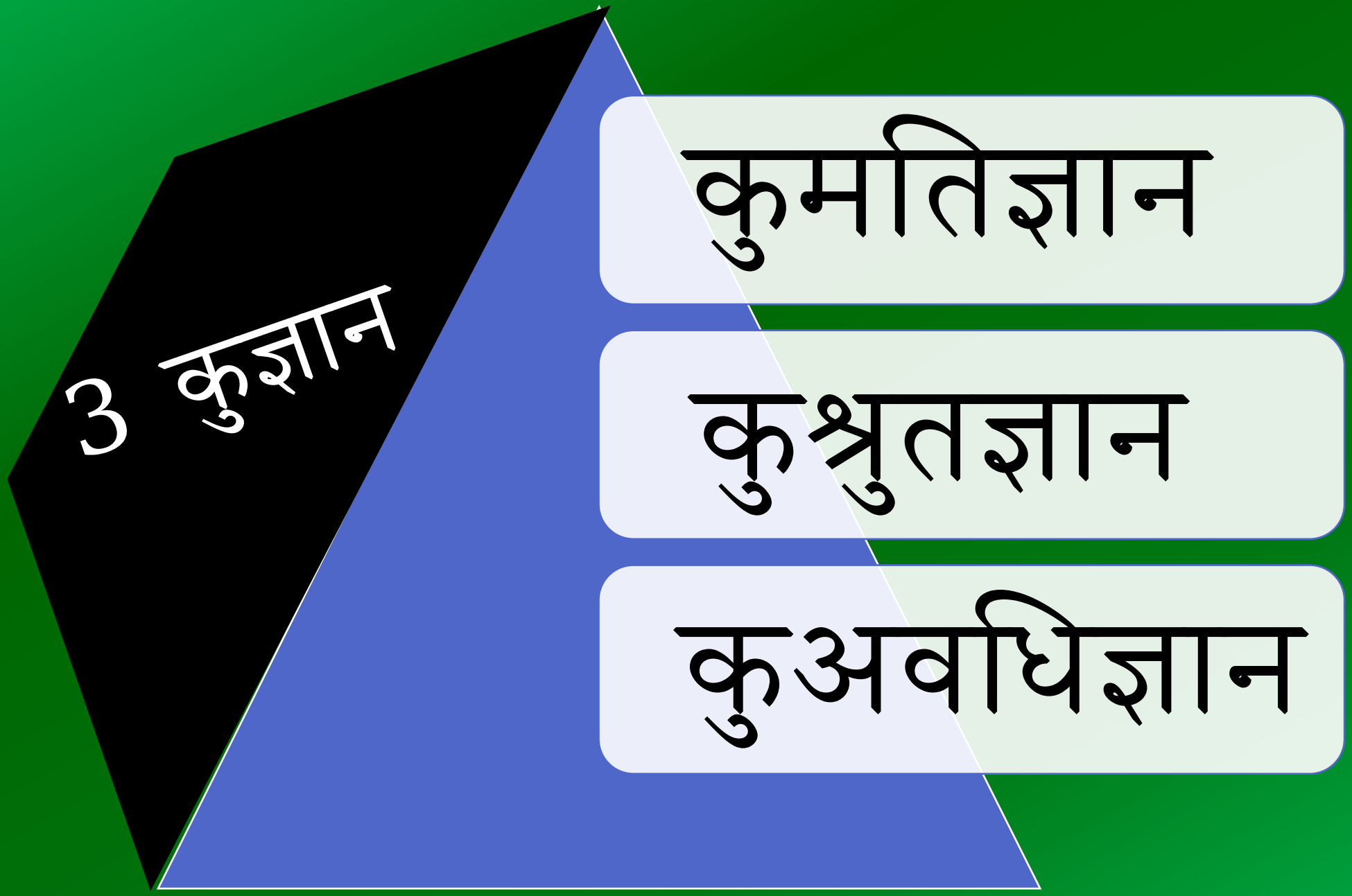

3 कुज्ञान

कुमतिज्ञान

कुश्रुतज्ञान

कुअवधिज्ञान

www.JainKosh.org

3 दर्शन

- चक्षुदर्शन
- अचक्षुदर्शन
- अवधिदर्शन

www.JainKosh.org

5 लब्धि

- दान
- लाभ
- भोग
- उपभोग
- वीर्य

www.JainKosh.org

क्षायोपशमिक सम्यक्त्व कैसे ?

मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी 4 का

उदयाभावी क्षय

सदवस्थारूप उपशम

सम्यक्त्व प्रकृति का

उदय

चल, मलादि दोष

तत्त्वार्थ श्रद्धान

अनंतानुबंधी	अप्रत्याख्यानावरण	प्रत्याख्यानावरण	संज्वलन
तत्त्वार्थश्रद्धानरूप सम्यक्त्व का घात हो	देशचारित्र का घात हो	सकलचारित्र का घात हो	यथाख्यातचारित्र का घात हो
अनंत संसार (मिथ्यात्व) के साथ संबंध कराये	किंचित् त्याग न होने दे	पूर्ण त्याग न होने दे	जो संयम के साथ प्रज्वलित रहे

www.JainKosh.org

क्षायोपशमिक चारित्र कैसे ?

अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान का

उदयाभावी क्षय

सदवस्थारूप उपशम

संज्वलन प्रकृति का

उदय

वीतरागता

यथाख्यात चारित्र का घात

संयमासंयम कैसे ?

अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यान का

प्रत्याख्यान सर्वघाती , संज्वलन देशघाती प्रकृति का

उदयाभावी क्षय

सदवस्थारूप उपशम

उदय

वीतरागता

सकल चारित्र का घात

❁264. य एकविंशतिविकल्प औदयिको भावउद्दिष्टस्तस्य [1]भेदसंज्ञासंकीर्तनार्थमिदमुच्यते-

❁264. अब जो इक्कीस प्रकार का औदयिक भाव कहा है उसके भेदों का कथन करने के लिए आगे का सूत्र कहते हैं –

www.JainKosh.org

गति-कषाय-लिंग-मिथ्यादर्शनाज्ञानासंयतासिद्ध-
लेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैक-षड्भेदाः ॥6॥

- औदयिक भाव के 21 भेद हैं-
- 4 गति, 4 कषाय, 3 लिंग, मिथ्यादर्शन, अज्ञान, असंयत, असिद्ध, 6 लेश्या।

www.JainKosh.org

औदयिक भाव

कर्मों के फलदान का सामर्थ्य प्रगट होना उदय है ।

उदय में जो हो वह औदयिक भाव है ।

www.JainKosh.org

गति नाम कर्म के उदय से

4 गति

- नरकगति
- तिर्यंचगति
- मनुष्यगति
- देवगति

www.JainKosh.org

कषाय कर्म के उदय से

4 कषाय

- कोध
- मान
- माया
- लोभ

www.JainKosh.org

वेद कषाय कर्म के उदय से

3 वेद

- स्त्रीवेद
- पुरुषवेद
- नपुंसक वेद

www.JainKosh.org

लेश्या

कषायों से अनुरंजित

मन, वचन और काय की

प्रवृत्ति को

लेश्या कहते हैं ।

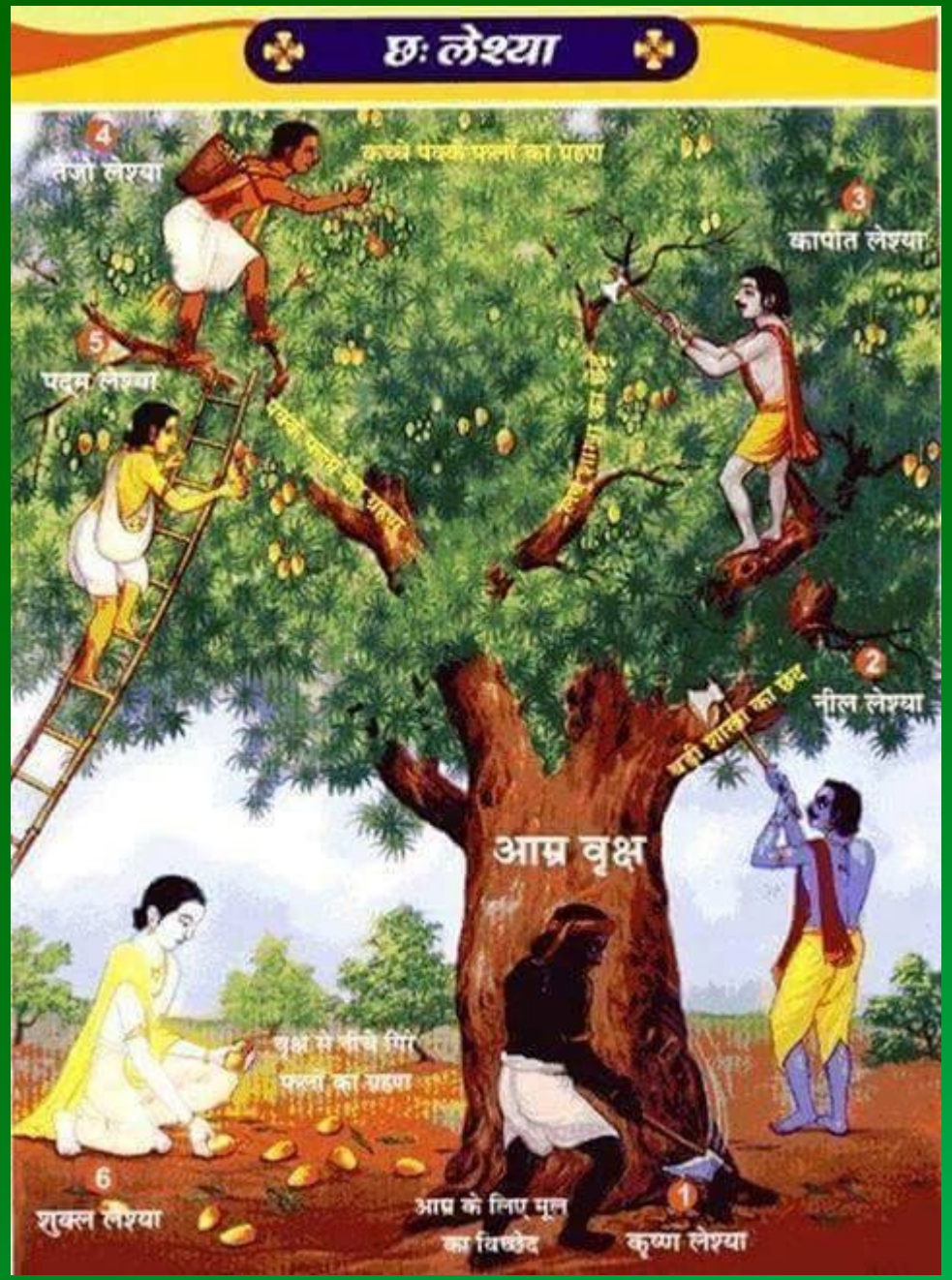

www.JainKosh.org

कषाय और शरीर नाम कर्म के उदय से

6 लेश्याएँ

- कृष्ण लेश्या
- नील लेश्या
- कापोत लेश्या
- पीत लेश्या
- पद्म लेश्या
- शुक्ल लेश्या

www.JainKosh.org

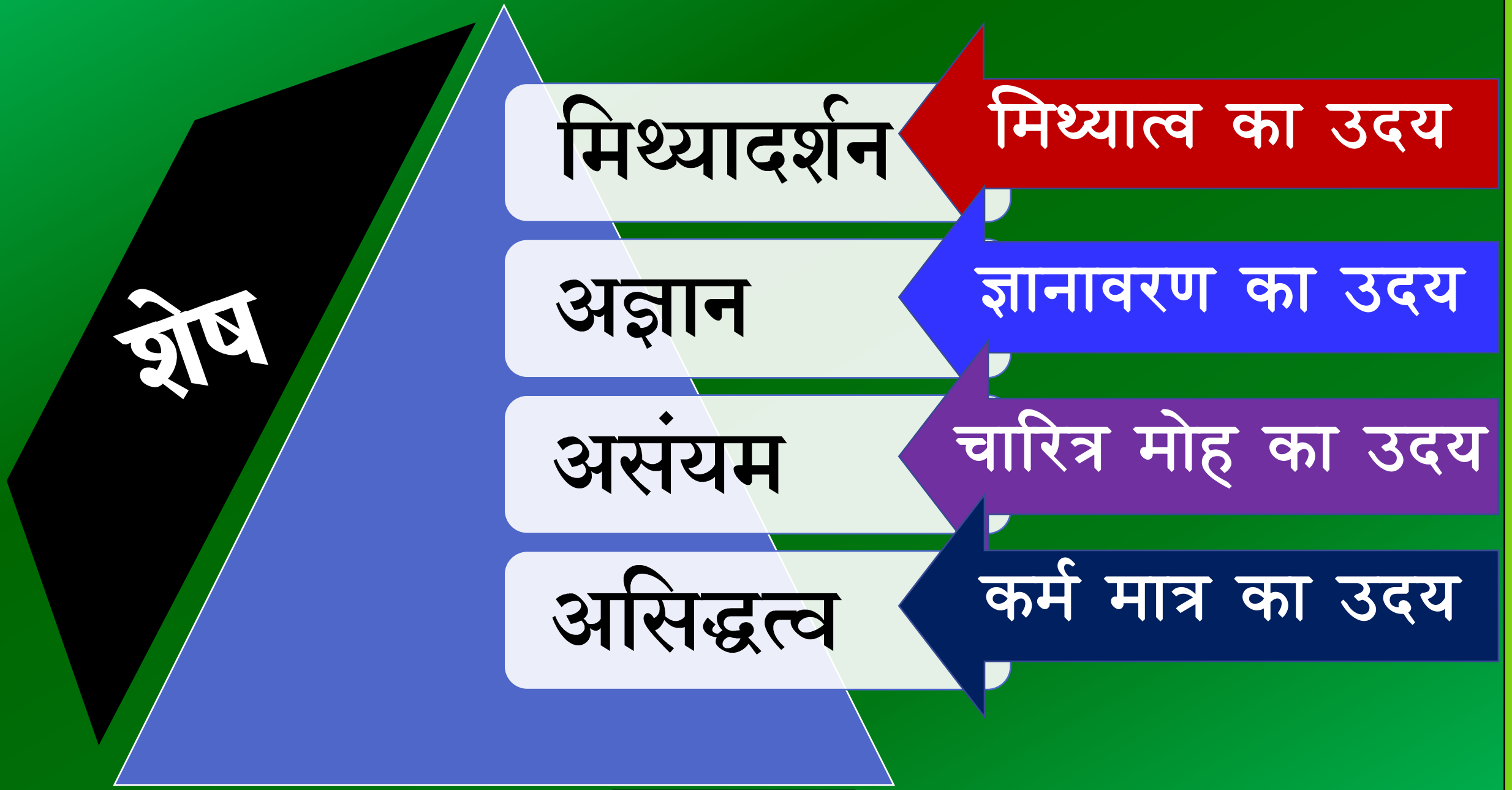

शेष
मिथ्यादर्शन
अज्ञान
असंयम
असिद्धत्व
मिथ्यात्व का उदय
ज्ञानावरण का उदय
चारित्र मोह का उदय
कर्म मात्र का उदय
www.JainKosh.org

- 265. यथाक्रममित्यनुवर्तते, तेनाभिसंबन्धाद् गतिश्चतुर्भेदा, नरकगतिस्तिर्यग्गतिर्मनुष्यगति-र्देवगतिरिति।
- तत्र नरकगतिनामकर्मोदयान्नारको भावो भवतीति नरकगतिरौदयिकी। एवमितरत्रापि।
- कषायश्चतुर्भेदः, क्रोधो मानो माया लोभ इति। तत्र क्रोधनिर्वर्तनस्य कर्मण उदयात्क्रोधः औदयिकः। एवमितरत्रापि।
- लिङ्गं त्रिभेदं , स्त्रीवेदः पुंवेदो नपुंसकवेद इति। स्त्रीवेदकर्मण उदयात्स्त्रीवेद औदयिकः। एवमितरत्रापि।

www.JainKosh.org

- मिथ्यादर्शनमेकभेदम्। मिथ्यादर्शनकर्मण उदयात्तत्त्वार्थाश्रद्धानपरिणामो मिथ्यादर्शनमौदयिकम् ।
- ज्ञानावरणकर्मण उदयात्पदार्थानवबोधो भवति तदज्ञानमौदयिकम्।
- चारित्रमोहस्य सर्वघातिस्पर्द्धकस्योदयादसंयत औदयिकः।
- कर्मोदयसामान्यापेक्षोऽसिद्ध औदयिकः।
- लेश्या द्विविधा, द्रव्यलेश्या भावलेश्या चेति। जीवभावाधिकाराद् द्रव्यलेश्या नाधिकृता। भावलेश्या कषायोदयरञ्जिता योगप्रवृत्तिरिति कृत्वा औदयिकीत्युच्यते। सा षड्विधा – कृष्णलेश्या नीललेश्या कापोतलेश्या तेजोलश्या पद्मलेश्या शुक्ललेश्या चेति।

www.JainKosh.org

❁266. ननु च उपशान्तकषाये क्षीणकषाये सयोगकेवलिनि च शुक्ललेश्याऽस्तीत्यागमः। तत्र कषायानुरञ्जनाभावादौदयिकत्वं नोपपद्यते।

❁नैष दोष; पूर्वभावप्रज्ञापननयापेक्षया यासौ योगप्रवृत्तिः कषायानुरञ्जिता सैवेत्युपचारादौदयिकीत्युच्यते। तदभावादयोगकेवल्यलेश्य इति निश्चीयते।

www.JainKosh.org

औदयिक भाव तो और भी हैं फिर उन सबका यहाँ ग्रहण क्यों नहीं किया ?

शेष का अंतर्भाव इन 21 प्रकृतियों में ही हो जाता है ।

वेद	हास्यादि
गति	वेदनीय, आयु, गोत्र
मिथ्यादर्शन	दर्शनावरण आदि

कौन-से औदयिक भाव में कौन-सा कर्म गर्भित है?

ज्ञानावरण	• अज्ञान
दर्शनावरण	• मिथ्यादर्शन (अदर्शन)
दर्शन मोहनीय	• मिथ्यादर्शन
चारित्र मोहनीय	• वेद, असंयम
आयु, नाम, गोत्र, वेदनीय	• गति

www.JainKosh.org

❁267. यः पारिणामिको भावस्त्रिभेद उक्तस्तद्भेदस्वरूपप्रतिपादनार्थमाह -

❁267. अब जो तीन प्रकार का पारिणामिक भाव कहा है उसके भेदों के स्वरूप का कथन करने के लिए आगे का सूत्र कहते हैं –

www.JainKosh.org

जीवभव्याभव्यत्वानि च॥7॥

☸जीवत्व, भव्यत्व और अभव्यत्व – ये 3 प्रकार के पारिणामिक भाव हैं ।

www.JainKosh.org

पारिणामिक भाव

कर्मों की उपाधि से रहित ऐसा

जो परिणाम में हुआ भाव है

वह पारिणामिक भाव कहलाता है ।

www.JainKosh.org

पारिणामिक भाव

जीवत्व	•चैतन्य परिणाम
भव्यत्व	•सम्यग्दर्शन प्रगट होने की योग्यता
अभव्यत्व	•सम्यग्दर्शन न प्रगट होने की योग्यता

www.JainKosh.org

भव्य

निकट भव्य

शीघ्र ही मोक्ष प्राप्त करेगा

दूर भव्य

कुछ समय बाद मोक्ष प्राप्त करेगा

दूरान्दूर भव्य

योग्यता होने पर भी जो मोक्ष नहीं प्राप्त करेगा

❁268. जीवत्वं भव्यत्वमभव्यत्वमिति त्रयो भावाः पारिणामिका अन्यद्द्रव्यासाधारणा आत्मनो वेदितव्याः। कुतः पुनरेषां पारिणामिकत्वम्। कर्मोदयोपशमक्षयक्षयोपशमानपेक्षित्वात्। जीवत्वं चैतन्यमित्यर्थः। सम्यग्दर्शनादिभावेन भविष्यतीति भव्यः। तद्विपरीतोऽभव्यः। त एते त्रयो भावा जीवस्य पारिणामिकाः।

www.JainKosh.org

❁269. ननु चास्तित्वनित्यत्वप्रदेशवत्त्वादयोऽपि भावाः पारिणामिकाः सन्ति, तेषामिह ग्रहणं कर्तव्यम्।

❁न कर्तव्यम्; कृतमेव।

❁कथम् ? 'च'शब्देन समुच्चितत्वात्।

❁यद्येवं त्रय इति संख्या विरुध्यते। न विरुध्यते, असाधारणा जीवस्य भावाः पारिणामिकास्त्रय एव। अस्तित्वादयः पुनर्जीवाजीवविषयत्वात्साधारणा इति 'च'शब्देन पृथग्गृह्यन्ते।

www.JainKosh.org

आह, औपशमिकादिभावानुपपत्तिरमूर्तत्वादात्मनः। कर्मबन्धापेक्षा हि [3]ते भावाः। न चामूर्तेः कर्मणां बन्धो युज्यत इति।

तन्न; अनेकान्तात्। नायमेकान्तः अमूर्तिरेवात्मेति। कर्मबन्धपर्यायापेक्षया तदावेशात्स्यान्मूर्तः। शुद्धस्वरूपापेक्षया स्यादमूर्तः।

यद्येवं कर्मबन्धावेशादस्यैकत्वे सत्यविवेकः प्राप्नोति। नैष दोषः; बन्धं प्रत्येकत्वे सत्यपि लक्षणभेदादस्य नानात्वमवसीयते। उक्तं च –

‘‘बंधं पडि एयत्तं लक्खणदो हवइ तस्स णाणत्तं।

तम्हा अमुत्तिभावो णेयंतो होइ जीवस्स।।’’ इति।

www.JainKosh.org

कर्म का

औपशमिक	क्षायिक	मिश्र (क्षायोपशमिक)	औदयिक	पारिणामिक
उपशम (दबना)	क्षय (अत्यन्त वियोग)	क्षयोपशम (फल, दबना, वियोग एक साथ)	उदय (फल)	कर्म-निरपेक्ष

www.JainKosh.org

औपशमिक	क्षायिक	मिश्र (क्षायोपशमिक)	औदयिक	पारिणामिक
मोहनीय	4 घातिया	4 घातिया	8 कर्म	-

संबंधित कर्म

www.JainKosh.org

5 भावों के स्वामी कौन-कौन हैं?

पारिणामिक	औदयिक	क्षायोपशमिक	क्षायिक	औपशमिक
समस्त जीवों में	समस्त संसारी जीवों में	12 गुणस्थान वर्ती जीवों तक	सिद्ध, अरहंत, क्षायिक सम्यग्दृष्टि	औपशमिक सम्यक्त्व, चारित्र वाले जीवों के

www.JainKosh.org

5 भावों के काल

सादि	• स+आदि = जिसकी शुरुआत हुई है
सांत	• स+अंत = जिसका अंत हुआ है
अनादि	• अन्+आदि = जिसकी शुरुआत नहीं हुई है
अनंत	• अन्+अंत = जिसका अंत नहीं है

www.JainKosh.org

5 भावों के काल

औपशमिक	क्षायिक	क्षायोपशमिक	औदयिक	पारिणामिक
सादि-सांत	सादि-सांत, सादि-अनंत	अनादि-अनंत, अनादि-सांत	अनादि-अनंत, अनादि-सांत	अनादि-अनंत, अनादि-सांत (भव्यत्व)
अंतर्मुहूर्त	33 सागर+2 पूर्व कोटि कुछ कम			

हेय-उपादेय

औपशमिक	क्षायिक	मिश्र (क्षायोपशमिक)	औदयिक	पारिणामिक
एकदेश उपादेय	प्रकट करने योग्य उपादेय	एकदेश उपादेय	हेय	आश्रय करने योग्य परम उपादेय

www.JainKosh.org

5 भाव समझने से लाभ

पारिणामिक

- स्वभाव कभी नष्ट नहीं हुआ है और न होगा, इसमें अपनत्व से ही सुख की प्राप्ति होगी ।
- आत्म निर्भरता आती है ।

औदयिक

- यद्यपि ये रागादि भाव मेरे हैं, परन्तु कर्म सापेक्ष हैं मेरा स्वभाव नहीं हैं ।
- स्वभाव से शुद्ध होने पर भी कर्म सम्बन्ध से विकार पर्याय में है।

www.JainKosh.org

5 भाव समझने से लाभ

क्षायिक

- पुरुषार्थ से विकार नष्ट होता है ।
- एक बार विकार नष्ट होने पर पुन: विकार नहीं आता, स्वभाव बना रहता है।

क्षायोपशमिक

- किसी भी दशा में स्वभाव की व्यक्तता का पूर्णत: अभाव नहीं होता है ।
- अनादि से विकार करता हुआ भी जीव जड़ नहीं होता है ।

औपशमिक

- सबसे पहले श्रद्धा सम्बन्धी शुद्धता प्राप्त होती है ।
- पारिणामिक भाव के आश्रय से विकार दूर होना शुरू होता है ।

www.JainKosh.org

- Reference : श्री गोम्मटसार जीवकाण्डजी, श्री जैनेन्द्रसिद्धान्त कोष, तत्त्वार्थसूत्रजी

- Presentation created by : Smt. Sarika Vikas Chhabra
- For updates / comments / feedback / suggestions, please contact

  - sarikam.j@gmail.com
  - ☎: 9406682889
  - www.Jainkosh.org